ग़ज़ल

विनय मिश्र

जाने कब आँखों में आए कब हो जाए ओझल ख़्वाब
उसका रस्ता दिन भर देखूँ कब दिख जाए दो पल ख़्वाब

इस दुनिया में छोटे छोटे अपने काम बनाने को
कर देते हैं हम ना जाने कितनों के ही घायल ख़्वाब

काँटों का भी दिल भर आए फूलों की तो बात ही क्या
अपने कोमल पाँवों से ही चलते हैं जब पैदल ख़्वाब

सड़कों पर अक्सर मिल जाता है अपने सूनेपन में
मेरे पीछे पड़ जाने को आमादा वो पागल ख़्वाब

कोई सीखे राह बनाना इनके रस्ते पर चलकर
मरने की सौ विपदाओं में हैं जीने के कौशल ख़्वाब

कितना अपनापन देते हैं इस बेगानेपन में भी
हर मुश्किल में आ जाते हैं देने मुश्किल का हल ख़्वाब

इनसे ही है इस जीवन में शामिल संघर्षों का ताप
आ जाते हैं चाहे बनकर आँखों में गंगाजल ख़्वाब

******

भोर की बातें सुनाकर सो गया
किस अदा से वक्त काँटे बो गया

मेरा अपना वो सुपरिचित रास्ता
कुछ तो है जो अब तुम्हारा हो गया

गाँव की ताज़ा हवा में था सफ़र
शहर आकर जो धुएँ में खो गया
लालसाओं का समन्दर है यहाँ
डूबकर मैं और प्यासा हो गया

स्वार्थों का बन गया वो राजपथ
रास्ता जो भी सियासत को गया

अपने हिस्से में जो रोटी ही नहीं
हाथ से फिर मन का मौसम तो गया

इक उदासी शाम की मौजूद है
वो जो सूरज दिख रहा था वो गया

मौत ने मुझको जगाया था मगर
ज़िंदगी के फ़लसफों में सो गया ❖